दादा भगवान परिवार का
अप्रैल - २०२१
शुल्क प्रति नकल :₹ २०/-

अक्रम एक्सप्रेस

एकाग्रता

संपादकीय

बालमित्रों,

'ओह मम्मी! कितना पढ़ता हूँ फिर भी याद ही नहीं रहता। अब मुझे पढ़ने में बोरियत होने लगी है।'

'लेकिन पढ़ना तो पड़ेगा न बेटा?'

'मम्मी, मैं थोड़ी देर टी.वी. देख लूँ?'

'अभी तो खेल कर आया है और अब टी.वी.! सारा दिन ऐसा ही करता रहेगा तो पढ़ा हुआ कैसे याद रहेगा?'

यह कहानी कहीं आपकी तो नहीं है न? क्या मम्मी की बात सच है? तो अब क्या करना है?

आपकी उलझन का समाधान इस अंक में है। ज़रूर पढ़ना, सोचना, अपनाना और फिर देखना चमत्कार। तो हो जाओ तैयार।

– डिम्पल मेहता

वर्ष : ८ अंक : १२
अखंड क्रमांक : ९७
अप्रैल - २०२१

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

Editor : Dimple Mehta

Printer & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar - 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist-Gandhinagar.

© 2020, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved

अक्रम एक्सप्रेस

जीवंत उदारहण

एक बार स्वामी विवेकानंद कलकत्ता के बेलुर मठ में थे। उन्होंने पढ़ने के लिए एनसाइक्लोपीडिया बिट्रानिका (विश्वकोष)के ग्रंथ मँगवाए थे। यह देखकर उनके शिष्य ने कहा, "स्वामी जी, एक ज़िंदगी में तो व्यक्ति इतने सारे ग्रंथ नहीं पढ़ सकता," यह सुनकर उन्होंने कहा, "यह आपने क्या कहा? ये दस भाग तो मैंने थोड़े दिनों में ही पढ़ लिए। ग्यारहवाँ भाग पढ़ रहा हूँ।"

यह सुनकर शिष्य को बहुत आश्चर्य हुआ और कहा, "वास्तव में पढ़ लिए?"

"हाँ, आपको इन दस भागों में से कुछ भी पूछना हो तो आप पूछ सकते हो!"

शिष्य ने गुरु की परीक्षा लेना शुरू किया। अलग-अलग भागों में से शिष्य स्वामी जी से प्रश्न पूछते रहे और स्वामी जी सभी का जवाब देते गए।

गुरु की तीव्र यादशक्ति से आश्चर्यचकित होकर शिष्य ने कहा, "स्वामी जी, यह मनुष्य के बस की बात नहीं है। आप तो चमत्कारी पुरुष हैं" तब स्वामी जी ने कहा, "इसमें चमत्कार जैसा कुछ भी नहीं है, यह तो एकाग्रता का परिणाम है।"

देखा न मित्रों, एकाग्रता के कितने आश्चर्यजनक परिणाम आते हैं!

पश्चिम के महान चिंतक एमर्सन के पास एक युवक आया। उसने उनसे पूछा, "सफलता का रहस्य क्या है?" उन्होंने कहा, "सफलता का रहस्य है, एकाग्रता। युद्ध में, व्यापार में या जीवन के किसी भी क्षेत्र में, सफलता प्राप्त करने के लिए एकाग्रता ज़रूरी है।"

ज्ञानी कहते हैं...

प्रश्नकर्ता : पढ़ाई में मेरी एकाग्रता क्यों नहीं रहती?

पूज्यश्री : एकाग्रता की शक्ति तो बहुत पावरफुल है। लेकिन पढ़ाई के अलावा दूसरी जगहों पर उसका उपयोग हो जाता है। टी.वी. में, कौन कैसा दिखता है, कौन सी सीरियल चल रही है, कौन क्रिकेट खेल रहा है, कौन सी ड्रेस का फैशन है, इन सब में पड़ जाते हैं। यानी चित्त शक्ति का उपयोग कहीं और होता है इसलिए पढ़ने में एकाग्रता कम हो जाती है। पढ़ते समय क्या तुम्हारा चित्त खेलने में चला जाता है?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

पूज्यश्री : तो याद रहना चाहिए। यदि चित्त की एकाग्रता से पढ़ाई की जाए तो याद रहता है। ये तो सिर्फ शब्द पढ़ते हैं और चित्त क्रिकेट में होता है। ऐसा होता है या नहीं? यदि एक साथ दो काम करें न, तो दोनों ही बिगड़ जाते हैं। न तो क्रिकेट ठीक से देख पाते हो और न ही पढ़ा हुआ ठीक से याद रहता है। चित्त भटकता हो तो कुछ याद नहीं रहेगा।

प्रश्नकर्ता : तो पढ़ाई में यादशक्ति बढ़ाने के लिए हमें क्या करना चाहिए?

पूज्यश्री : सबसे पहले तो पढ़ाई का महत्व समझकर उसमें इन्टरेस्ट आए ऐसा करना पड़ेगा। फर्स्ट प्रायोरिटी पढ़ाई को देनी है। यदि इन्ट्रेस्ट होगा न तो यादशक्ति बहुत बढ़ जाएगी।

दूसरा, "दादा भगवान के असीम जय-जयकार हो" बोलने से चित्त शुद्ध होता जाता है। और शुद्ध चित्त जबरदस्त ग्रैस्पिंग कर सकता है। उससे एकाग्रता की शक्ति बढ़ जाती है और पढ़ते समय याद शक्ति बहुत बढ़ जाती है। आँखे बंद करके, कान से सुनाई दे ऐसे एक-एक अक्षर दा..दा..भ..ग..वा..न.., पढ़ते हुए दस मिनट तक **"दादा भगवान के असीम जय-जयकार हो..."** करोगे तो बहुत पावर बढ़ जाएगा।

कई लोगों का यह अनुभव है कि पढ़ने से पहले दस मिनट तक इस तरह, "असीम जय-जयकार" बोलने से और शक्ति माँगकर पढ़ने से कि 'हे दादा भगवान, मुझे पढ़ा हुआ याद रहे ऐसी शक्ति दीजिए। एकाग्रता से पढ़ सकूँ, ऐसी शक्ति दीजिए' तो फिर इसके परिणाम स्वरूप पहले यदि ५८ प्रतिशत आते हों तो वे बढ़कर ७८ प्रतिशत हो जाएँगे। बीस प्रतिशत रिज़ल्ट बढ़ जाते हैं!

परीक्षा का अच्छा रिज़ल्ट चाहते हो तो यह प्रयोग करके देखना। रिज़ल्ट अच्छा आएगा।

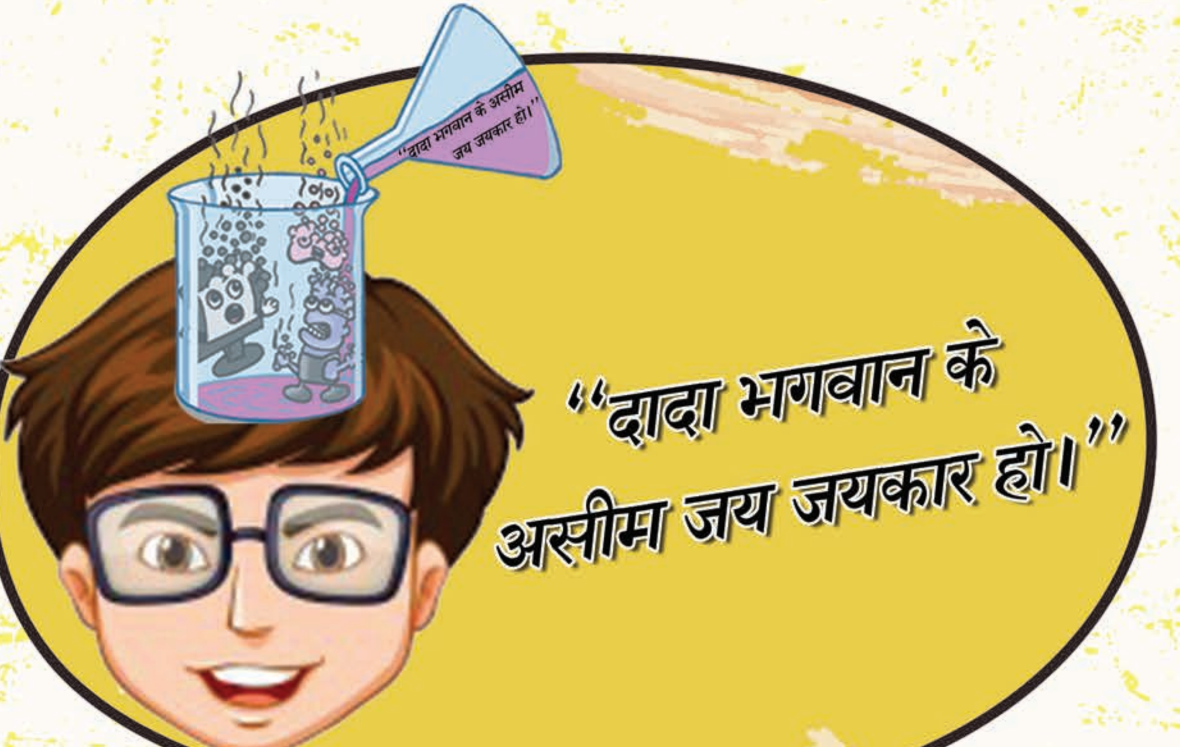

शतरंज का ज़ोरदार खेल चल रहा था। राजमहल के बगीचे के पक्षियों की मीठी मधुर आवाज़ के अलावा और कोई आवाज़ें नहीं आ रही थी, मंत्री पुत्र नंदीश अपनी चाल सोच रहा था। उसने हाथ मले और हल्के से मुस्कुराया, "कुमार, अब तो आप अच्छी तरह से फँस गए..."

नंदीश ने राजकुमार की तरफ देखा और देखते ही उसकी मुस्कुराहट गायब हो गई, "लेकिन, आपका ध्यान कहाँ है कुमार? आजकल आप बहुत खोए हुए रहते हैं? क्या परेशानी है?"

"परेशानी?! मुझे क्या परेशानी होगी!" राजकुमार को थोड़ी बेचैनी महसूस हुई, "यह खेल हम कल खेलेंगे।" यह कहकर राजकुमार खेल छोड़कर राज्य में टहलने निकल गए। तभी राजा के सेवक उनके पास राजा का बुलावा लेकर आए, "कुमार, राजाजी ने तत्काल आपको दरबार में बुलाया है।"

दरबार में आचार्य लेखनाथजी, राजाजी के समक्ष, आई हुई विकट परिस्थिति का वर्णन कर रहे थे, "महाराज, इस बीमारी का इलाज सिर्फ मंगलेश ऋषि के पास है। मांत्रिक भाषा में इस मंत्र में न सिर्फ रोग मिटाने की शक्ति है बल्कि कुछ ऐसे पदार्थों का उल्लेख है जिनका सेवन करने से साधु अवश्य ठीक हो जाएँगे। यदि आपकी मदद मिल जाए तो हम आपका यह उपकार कभी नहीं भूलेंगे।"

महाराज ने बहुत नम्रता से कहा, "आचार्यजी, आप तो हमारे खास मेहमान हैं। आपकी मदद करना तो हमारा सौभाग्य होगा।"

महाराज को दिल से वंदना करके और राजकुमार को नमस्कार करके आचार्य जी विदा हुए।

राजकुमार को परिस्थिति के बारे में कुछ पता चला गया था लेकिन फिर भी उन्होंने राजा जी से इस बारे में विस्तार से जानना चाहा, "क्या बात है महाराज? हम किस तरह से उनकी मदद कर सकते हैं?

महाराज ने कहा, "कुमार, साधुगण एक अनजाने रोग से बीमार पड़ रहे हैं। इस बीमारी के कारण एक के बाद एक साधुओं की मृत्यु हो रही है। आचार्य लेखनाथ को विश्वास है कि सोमेश्वर पर्वत की गुफा में रहने वाले ऋषि मंगलेश

शक्ति का उपयोग कहाँ किया?

के पास इस बीमारी का इलाज है।"

"लेकिन महाराज, सोमेश्वर पर्वत पर जाना, चढ़ाई करना बहुत ही कठिन काम है।" कुमार ने गंभीरता से कहा।

"जानता हूँ कुमार। लेकिन हमारे राज्य पर आचार्य जी के अनगिनत उपकार हैं। उन्होंने हमेशा हमारी सामाजिक और आध्यात्मिक समस्याओं का उपाय बताया है। उनकी मदद करना हमारा फर्ज़ है। तुम्हारे अलावा किसी और को यह महत्वपूर्ण काम नहीं सौंपा जा सकता। पहाड़ी का रास्ता खतरनाक है इसलिए प्रद्युत को साथ लेकर जाओ।" राजा ने कुमार के प्रति विश्वास व्यक्त किया।

अपने प्रति राजा का विश्वास देखकर कुमार को खुद पर गर्व हुआ। और वे मंगलेश ऋषि तक पहुँचने की साहसिक यात्रा करने के लिए तैयार हो गए। ऊबड़-खाबड़, टेढ़े-मेढ़े रास्ते से होते हुए अंत में राजकुमार और प्रद्युत गुफा तक पहुँच गए।

ऋषि गुफा में ध्यान मग्न थे। उन्हें राजकुमार के आने का कारण पता लग गया। वे राजकुमार का स्वागत करने गुफा से बाहर निकले। राजकुमार ने विनयपूर्वक ऋषि को प्रणाम किया।

ऋषि ने कहा, "यशस्वी भवः कुमार। अब बहुत ही एकाग्रतापूर्वक यह मंत्र सुनो और कंठस्थ कर लो। और बिना देर किए आचार्य जी तक यह मंत्र पहुँचा दो।"

आश्चर्य की बात तो यह थी कि बिना कुछ कहे ही ऋषि मंगलेश को राजकुमार के आने का कारण पता चल गया।

उन्होंने मंत्र बोलना शुरू किया : सुशंस सुशंस शुभायते अर्दानी यापन ईहात्र... समत्रय यशांगम। राजकुमार मंत्र सुन रहे थे। प्रद्युत हाथ जोड़कर राजकुमार के पास खड़ा था।

एक बार मंत्र पूरा सुनाने के बाद, ऋषि ने फिर से एक-दो बार और बोलकर मंत्र सुनाया। इसके तुरंत बाद ही राजकुमार, प्रद्युत को लेकर आचार्य लेखनाथ के पास जाने के लिए निकल पड़े। कठिन रास्ता पार करके दोनों आचार्य के निवास पर पहुँचे।

"धन्य है कुमार। कितनी सारी तकलीफें उठाकर भी आप साधुओं के स्वास्थ्य के लिए मंत्र ले आए। आपका बहुत बहुत उपकार। मंत्र बताने की कृपा करें।" आचार्य ने विनम्रता से कहा।

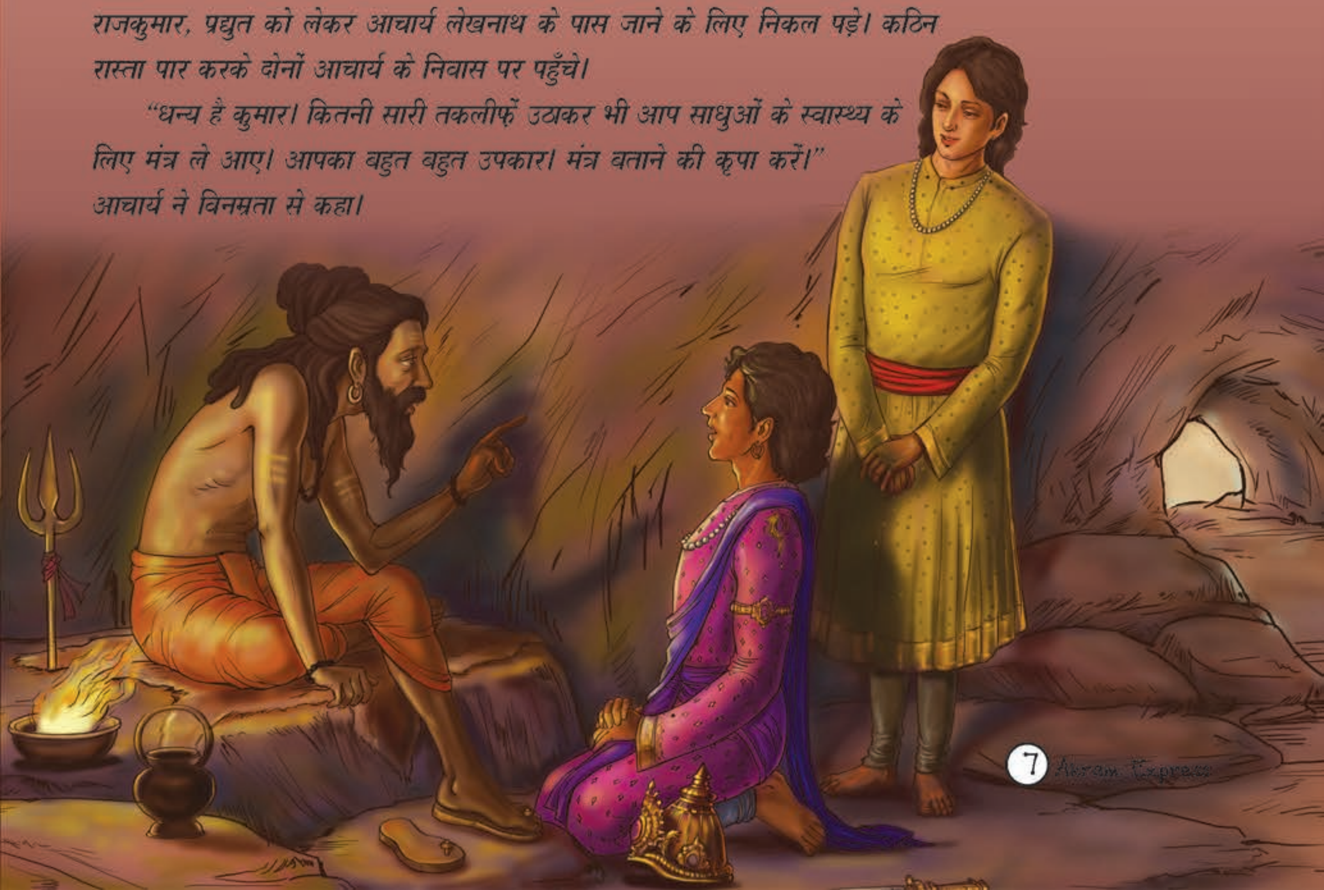

"आचार्य जी, मुनिवर ने यह मंत्र बताया है : सुशंस सुशंस शुभायते..."

बोलते-बोलते अचानक राजकुमार मंत्र भूल गए। उन्हें पसीना छूटने लगा। दिमाग़ पर बहुत ज़ोर डाला लेकिन फिर भी मंत्र याद ही नहीं आ रहा था।

"शांत हो जाओ कुमार। याद आ जाएगा," आचार्य ने कुमार को आश्वासन दिया। लेकिन याद आने का ज़रा सी भी संभावना कुमार को नज़र नहीं आ रही थी।

तभी प्रद्युत बोला, "कुमार मुझे मंत्र याद है, मैं बोलूँ?"

"हाँ-हाँ, अवश्य प्रद्युत," कुमार की जान में जान आई।

प्रद्युत ने शुरू से अंत तक पूरा मंत्र आचार्य जी को सुना दिया। आचार्य जी बहुत खुश हो गए और दोनों को आशीर्वाद दिए।

जब राजकुमार ने राजा जी को अपनी विस्मृति और प्रद्युत की स्मृति के बारे में बताया तब महाराज को थोड़ा दुःख हुआ। लेकिन वे इस बात से खुश हुए कि आचार्य जी को सही मंत्र प्राप्त हो गया था।

मंत्र के प्रताप से कुछ ही दिनों में सभी साधुगण ठीक हो गए। आचार्य लेखराज जी ने राजदरबार में जाकर राजा का आभार व्यक्त किया।

"आचार्य जी यह तो हमारा अहोभाग्य है कि आपकी मदद करने का अवसर मिला," राजा ने अपने दिल की भावना व्यक्त की। लेकिन मेरा एक प्रश्न है। पूछने हुए थोड़ा संकोच हो रहा है।

"महाराज, मेरे सामने संकोच कैसा?" आचार्य जी ने कहा।

" आप ठीक कह रहे हैं प्रभु! आपने तो हमेशा ही मेरी सभी शंकाओं का समाधान किया है। मुझे यह बात समझ में नहीं आ रही कि इतने तेजस्वी होते हुए भी राजकुमार को मंत्र क्यों नहीं याद रहा? और प्रद्युत को मंत्र याद रह गया?" राजा ने हाथ जोड़कर पूछा।

"महाराज, यदि राजकुमार ने चित्त हाज़िर रखकर मंत्र सुना होता तो वे नहीं भुलते। लेकिन शायद मंत्र सुनते समय उनका चित्त किसी दूसरी जगह चला गया होगा। चित्त भटकता हो तो कुछ याद नहीं रहता। चित्त की हाज़िरी के बिना किया हुआ काम बेकार जाता है।" आचार्य लेखनाथ ने गंभीरतापूर्वक कहा।

राजकुमार को थोड़ी शर्मिंदगी महसूस हुई। उन्हें याद आया कि मंत्र सुनते समय उनका ध्यान शतरंज की अधूरी चाल में चला गया था। न ही उनको चाल समझ में आई और न ही उन्हें मंत्र याद रहा।

"लेकिन प्रद्युत का चित्त मुनिवर के मंत्र पर स्थिर हो गया होगा। प्रद्युत को मंत्र याद रखने की रुचि उत्पन्न हुई क्योंकि उसे उस मंत्र का महत्व समझ में आ गया था। जहाँ रूचि होती है वहाँ एकाग्रता रहती ही है। और एकाग्रतापूर्वक सुनने से प्रद्युत को मंत्र याद हो गया।" आचार्य जी ने समझाया।

अपने प्रश्नों का समाधान प्राप्त करके राजा ने आचार्य जी का आभार माना।

राजकुमार ने हाथ जोड़कर आचार्य जी से माँफी माँगी, "मुझे क्षमा करें। मैंने आपको और राजा जी को निराश किया।"

आचार्य जी ने राजकुमार के सिर पर हाथ रखकर कहा, "कुमार, आपके पास चित्त की ज़बरदस्त शक्ति है। दिक्कत सिर्फ इतनी ही है कि शक्ति उल्टी जगह खर्च हो गई है। यदि यह शक्ति सही जगह पर खर्च हो तो आप सफलता की ऊँचाईयों तक पहुँच सकोगे। जीवन में बहुत प्रगति कर सकोगे।"

चित्त की शक्ति को सही रास्ते पर मोड़ने का मन ही मन निश्चय करके राजकुमार ने आचार्य जी को विदा किया।

चलो खेलें...

नीचे दिए गए टुकडों को जोड़कर ८ अंडाकार बनाओ ।

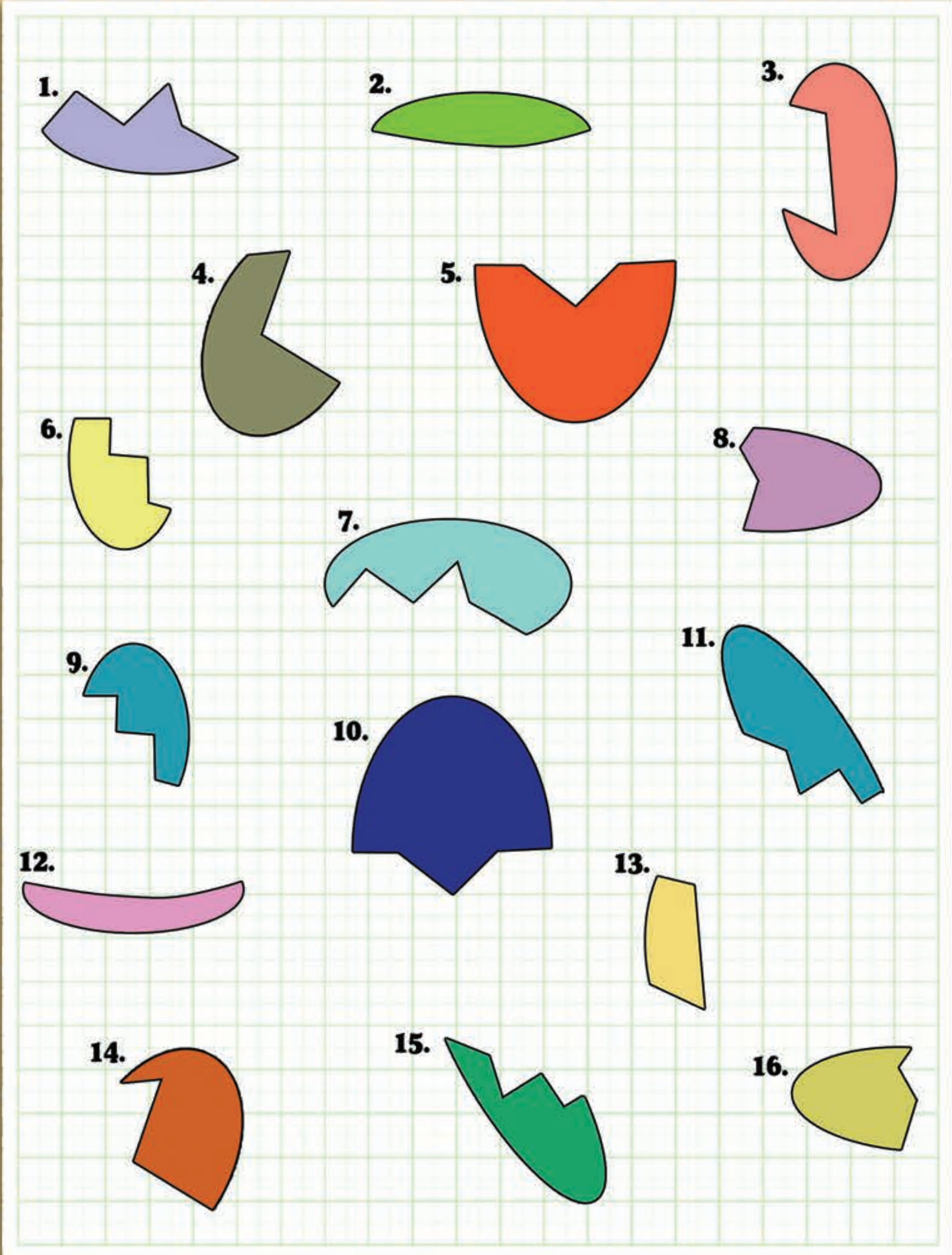

Ans. 1-7, 2-12, 3-13, 4-14, 5-10, 6-9, 8-16, 11-15

यह तो नई ही बात !

चित्त कैमरे के जैसा है। चित्त जो-जो फोटो खींचता है वही उसे याद रहता है। जिसमें रुचि होती है, चित्त उसका तुरंत फोटो खींच लेता है।

चित्त की हाज़िरी के बगैर किया गया कोई भी काम बेकार जाता है।

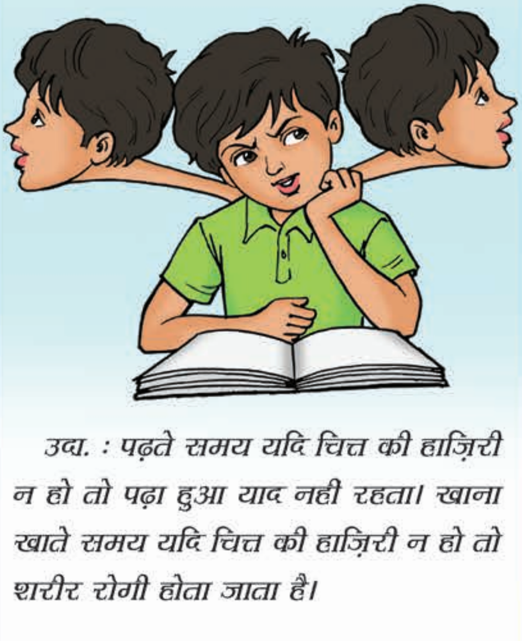

उदा. : पढ़ते समय यदि चित्त की हाज़िरी न हो तो पढ़ा हुआ याद नही रहता। खाना खाते समय यदि चित्त की हाज़िरी न हो तो शरीर रोगी होता जाता है।

उ. दा. : क्रिकेट, फिल्म, वीडियो-गेम्स आदि सब याद रह जाता है।

जब हमसे किसी को दुःख देना बंद होगा तब चित्त की शक्ति बहुत बढ़ जाएगी, एकाग्रता रहेगी और पढ़ाई में अच्छी ग्रैस्पिंग होगी।

किसी दूसरी जगह पर इन्ट्रेस्ट बढ़ जाता है इसलिए पढ़ाई करने में कम हो जाता है। यदि पढ़ाई में इन्ट्रेस्ट नहीं आता हो तो 'बहुत इन्ट्रेस्ट है' **ऐसा पच्चीस बार बोलने से** इन्ट्रेस्ट आने लगता है।

इंस्टॉल-अनइंस्टॉल

हाय काव्या! क्या कर रही हो?
वेकेशन में और क्या करें? टाइम पास करने के लिए नेटफ्लिक्स और हॉटस्टार पर अच्छे शोज़ और मूवीज़ ढूँढ रही हूँ। तू बोल, हाऊ आर यु...
ग्रेट! आर्या, सिया, खुशी और मैं, मनीष सर का 'वैदिक मैथ्स के वर्कशॉप' अटेंड करने वाले हैं। तू भी अटेंड करेगी?
हम्म्म्म्म...लेट मी थिंक। मैं तुझे बाद में बताऊँगी।
ओके, ग्रेट! और सुन... आज रात को नौ बजे हम सभी मिलकर वीडियो कॉल पर गप्पा मारने वाले हैं। तू जॉइन होगी?
नहीं यार। आज तो मैं फैमिली के साथ बैठकर पुराने फैमिली वीडियोज़ देखने वाली हूँ। फैमिली टाइम!
ओके... नो प्रॉब्लम! चल, तेरे फोन का इंतज़ार रहेगा ...
रात को खाना खाकर, काव्या अपनी फैमिली के साथ लिविंग रूम में सेट हो गई। नम्रता के साथ बात करने के बाद वह थोड़ी उदास हो गई थी। उसके भाई ने डी.वी.डी प्लेयर ऑन किया...

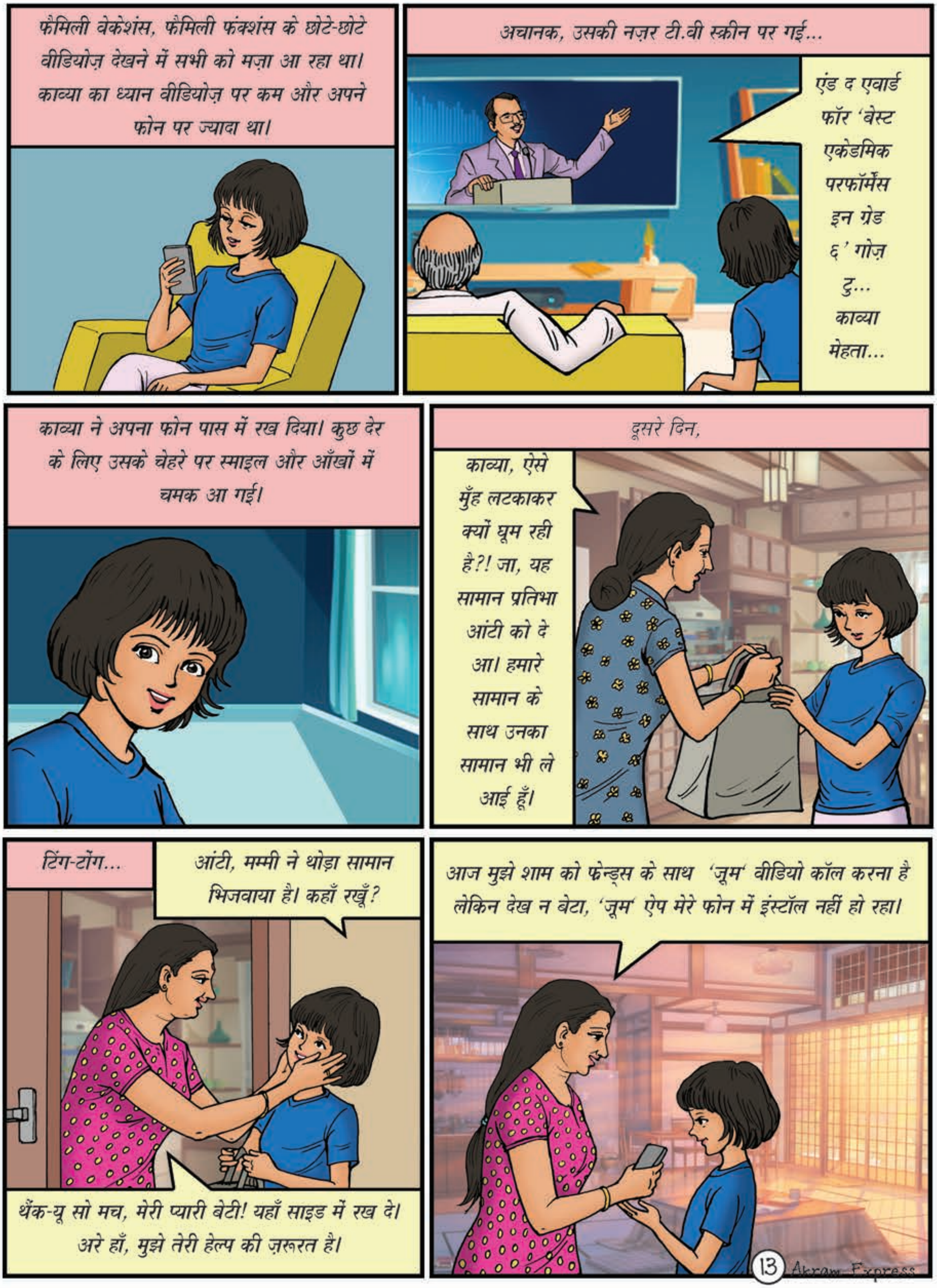
फैमिली वेकेशंस, फैमिली फंक्शंस के छोटे-छोटे वीडियोज़ देखने में सभी को मज़ा आ रहा था। काव्या का ध्यान वीडियोज़ पर कम और अपने फोन पर ज्यादा था।
अचानक, उसकी नज़र टी.वी स्क्रीन पर गई...
एंड द एवार्ड फॉर 'बेस्ट एकेडमिक परफॉर्मेंस इन ग्रेड ६' गोज़ टु... काव्या मेहता...
काव्या ने अपना फोन पास में रख दिया। कुछ देर के लिए उसके चेहरे पर स्माइल और आँखों में चमक आ गई।
दूसरे दिन,
काव्या, ऐसे मुँह लटकाकर क्यों घूम रही है?! जा, यह सामान प्रतिभा आंटी को दे आ। हमारे सामान के साथ उनका सामान भी ले आई हूँ।
टिंग-टोंग...
आंटी, मम्मी ने थोड़ा सामान भिजवाया है। कहाँ रखूँ?
थैंक-यू सो मच, मेरी प्यारी बेटी! यहाँ साइड में रख दे। अरे हाँ, मुझे तेरी हेल्प की ज़रूरत है।
आज मुझे शाम को फ्रेन्ड्स के साथ 'ज़ूम' वीडियो कॉल करना है लेकिन देख न बेटा, 'ज़ूम' ऐप मेरे फोन में इंस्टॉल नहीं हो रहा।

आंटी आपके फोन की मेमरी फुल हो गई है। इसलिए ऐप इंस्टॉल नहीं हो रहा। थोड़े अनवांटेड ऐप्स डिलीट कर दूँ?
श्योर!! प्लीज़ कर दे।
यह लो आंटी, आपका 'ज़ूम' ऐप इंस्टॉल हो गया।
थैंक-यू सो मच बेटा। लेकिन काव्या, एक बात पूछूँ? तू इतनी उदास क्यों दिख रही है? इज़ एवरीथिंग ओ.के.?
अपने पड़ोसी प्रतिभा आंटी के साथ काव्या ने बचपन से ही सभी बातें शेयर की थी।
आंटी, कल रात को मैंने अपने बचपन के फैमिली वीडियोज़ देखे। छोटी सी कॉन्फिडेंट काव्या को देखकर मुझे ऐसा लगा कि वह काव्या आज कहाँ खो गई है?
मुझमें कितना आत्मविश्वास था, मैं कितनी ब्राइट थी। वह सब कहाँ खो गया? आज तो मुझमें एक छोटा सा वर्कशॉप भी अटेंड करने का कॉन्फिडेंस नहीं है।
बेटा, तूने देखा न, कि फोन की मेमरी फुल हो जाने से 'ज़ूम' जैसी आवश्यक 'ऐप' इंस्टॉल करने के लिए दूसरे अनावश्यक ऐप्स अनइंस्टॉल करने पड़े?

आंटी की बात सुनकर काव्या थोड़ी कनफ्यूज़ हो गई।
उसी तरह पढ़ाई के लिए मेमरी नहीं बचती, क्योंकि वह मेमरी यू-ट्यूब, मूवीज़, फैशन आदि में खर्च हो जाती है।
यदि तुझे फिर से उस छोटी सी काव्या जैसा कॉन्फिडेंस वापस पाना हो तो उसकी तरह पढ़ाई की वैल्यू समझकर उसमें इन्टरेस्ट डेवेलप कर।
ऐसा करेगी तो तेरे इंटर्नल सॉफ्टवेयर में से अनावश्यक ऐप्स ऑटोमैटिकली अनइंस्टॉल हो जाएँगे और तू फिर से ब्राइट और कॉन्फिडेंट हो जाएगी। तुझे समझ में आया?
यस! थैंक-यू सो मच आंटी!
उस रात रोज़ की तरह काव्या ने अपने आई-पैड पर एक मूवी प्ले की। लेकिन उसे कुछ याद आया। आई-पैड स्विच ऑफ करके उसने नम्रता को फोन लगाया...
हाय नम्रता, वैदिक मैथ्स वर्कशॉप के लिए रजिस्ट्रेशन कब करना है?

ऐतिहासिक गौरव गाथा

श्रीपुर नगर में राजा श्रीशेण और सोम पुरोहित में बहुत अच्छी मित्रता थी। पुरोहित का कोई पुत्र नहीं होने की वजह से वे बहुत दुखी रहते थे। राजा ने पुरोहित से कहा, "मित्र, देवी की आराधना करने से आपको अवश्य ही पुत्र प्राप्त होगा।"

राजा की सलाह को मानकर पुरोहित देवी की आराधना करने लगे।

"पुरोहित, मुझे क्यों याद किया?" आराधना से प्रसन्न होकर देवी, पुरोहित के सामने प्रकट हुई। पुरोहित ने पूछा, "देवी, क्या मुझे पुत्र की प्राप्ती नहीं हो सकेगी? मेरे बाद राज्य में पूजा-पाठ वगैरह फिर कौन करेगा?"

देवी ने कहा, "पुरोहित, आपका पुत्र तो होगा, लेकिन वह जुआरी, व्याभिचारी और चोर होगा। ऐसे पुत्र से तो पुत्र का नहीं होना क्या अच्छा नहीं है?"

"देवी, चाहे कैसा भी हो लेकिन मुझे पुत्र दीजिए। लेकिन आपसे इतना माँगता हूँ कि वह चाहे कितना भी दुर्गुणी हो लेकिन आप उसे "विवेक" गुण अवश्य

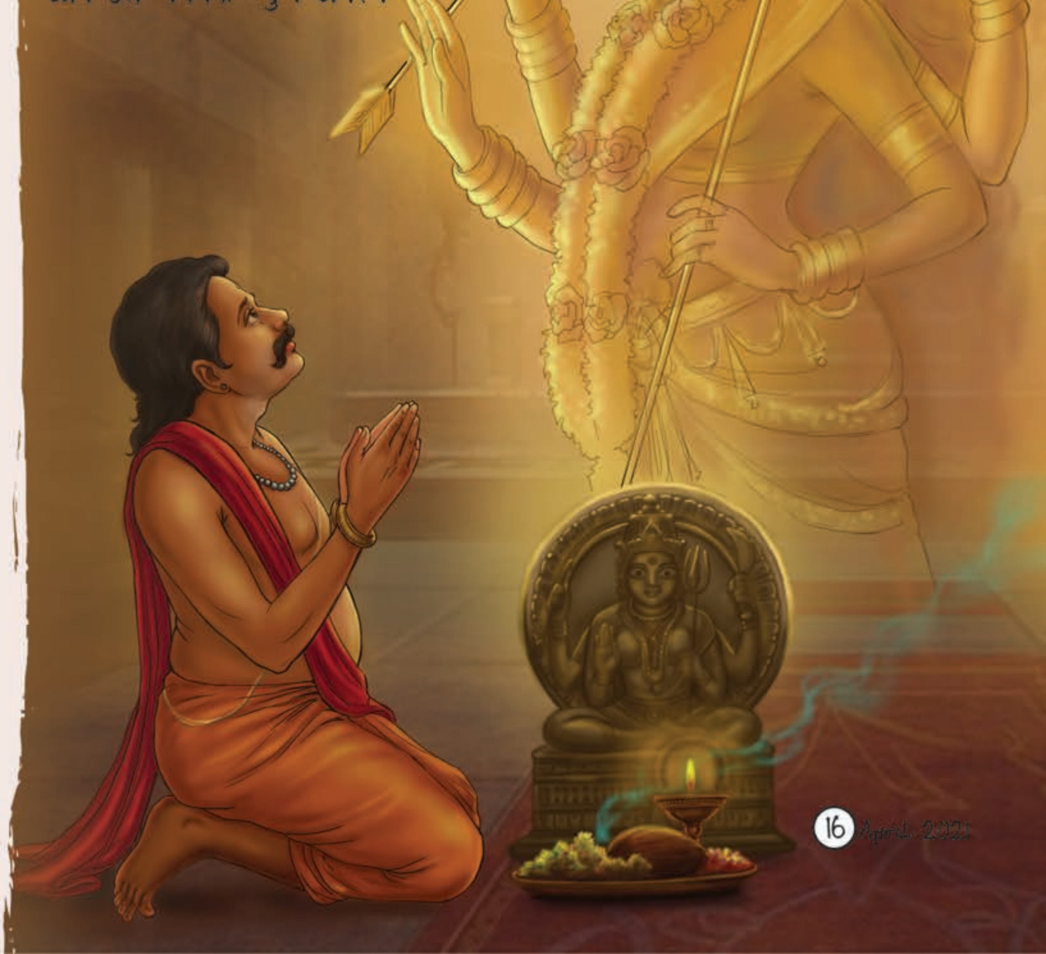

देना।"

"तथास्तु" कहकर देवी अदृश्य हो गईं।

थोड़े समय के बाद पुरोहित के घर पुत्र का जन्म हुआ। राजा ने पुत्र का नाम "सुमति" रखा। सुमति जब बड़ा हुआ तब राजा ने उसे ढोल-नगारों के साथ राज्य सभा में बुलाकर "पुरोहित" पद दिया।

एक बार सुमति पुरोहित ने राजमहल में राजा का नवलखा हार देखा। देखते ही उसके मन में लालच जागी। उसने आसपास नज़र दौड़ाई और हार ले लिया। चोरी करने के बाद, वह थोड़ा भयभीत हुआ। और अचानक मन में विवेक जागा, "मुझे धन की क्या ज़रूरत है कि इस तरह से हार चोरी कर लूँ? राजा मेरा बहुत सम्मान करते हैं। यदि उन्हें पता चलेगा कि मैंने चोरी की है तो मेरा मान कहाँ से रहेगा? इस जन्म में तो मुझे सज़ा मिलेगा ही, साथ ही साथ अगला जन्म भी बिगड़ जाएगा।" इस तरह सही-गलत के विवेक ने सुमति को चोरी करने से रोक दिया।

सुमति युवा और धनवान था। उसके बहुत सारे दोस्त थे, उनमें से कुछ चोर, व्यभिचारी और जुआरी भी थे। एक बार दो जुआरी दोस्त, सुमति को जुए के अड्डे पर लेकर गए। सुमति भी वहाँ खेलने बैठ गया। लेकिन तुरंत ही उसका विवेक जागा, "अरे, मैं यह क्या कर रहा हूँ? धर्मराज युधिष्ठिर भी जुए में पत्नी और राज्य हार बैठे थे। तो मैं यहाँ से क्या लेकर जा पाऊँगा?" वह तुरंत ही खड़ा हो गया। दोस्त देखते ही रह गए और सुमति वापस घर लौट गया।

समय बीतने लगा। राजा को सुमति पुरोहित, राजकुमार से भी ज्यादा प्यारा लगने लगा। कोई भी भरोसे वाला काम हो तो वे उसे ही सौंपते। इतना ही नहीं बल्कि काम सौंपने के बाद उससे कुछ पूछताछ भी नहीं करते थे।

एक बार सुमति ने राजा से पूछा, "राजन, मैं तो अभी युवा हूँ। दुनिया के तौर-तरीके मुझे नहीं आते हैं। मुझमें बहुत सारी कमियाँ हैं। फिर भी आप मुझ पर इतना भरोसा क्यों करते हैं?"

राजा ने कहा, "सुमति तुममें विवेक है। इसलिए चाहे जितनी भी कमियाँ हों लेकिन वह नष्ट हो जाएगी।" और वास्तव में ऐसा ही हुआ। सुमति में चोरी और जुआ खेलने के दुर्गुण थे लेकिन विवेक जैसे सदगुण की वजह से वे दुर्गुण प्रकट होते ही नष्ट हो जाते।

श्रीपुर का राज्य सुमति ने समृद्ध बनाया और अंत में उसे अच्छी गति प्राप्त हुई।

मीठी यादें

नीरू माँ जब मुंबई से अहमदाबाद सत्संग के लिए आते.. तब एक महात्मा के दो बच्चे हमेशा उनसे मिलने आते। उन दोनों भाई-बहन को 'मस्क्युलर डिस्ट्रोफी' नामक रोग हो गया था। उस रोग की वजह से वे खुद कुछ नहीं कर सकते थे। खाना खाना, चलना, उठना-बैठना, कपड़े पहनना आदि सभी चीज़ों के लिए उन्हें किसी की मदद की ज़रूरत पड़ती थी। दोनों बच्चों ने नीरू माँ से प्रॉमिस लिया था कि नीरू माँ जब भी अहमदाबाद आएँ तब उनसे अवश्य मिलें। नीरू माँ ने दिल से दोनों बच्चों का यह प्रॉमिस दिया था।

एक बार नीरू माँ सत्संग के लिए अहमदाबाद आए। जहाँ नीरू माँ ठहरे हुए थे उन महात्मा के घर भोजन का आयोजन किया गया था। खाने में श्रीखंड, पूड़ी और दूसरे बहुत सारे व्यंजन थे। वे दोनों बच्चे नीरू माँ से मिलने महात्मा के घर पहुँचे। नीरू माँ दोनों बच्चों से मिले और फिर अपने हाथों से दोनों बच्चों को खाना खिलाना शुरू किया।

नीरू माँ ने एक चम्मच भरकर श्रीखंड उस बच्चे को खिलाया लेकिन वह आधा चम्मच ही खा सका। बाकी का श्रीखंड चम्मच में ही रह गया। चम्मच में बचा हुआ श्रीखंड नीरू माँ ने खुद खा लिया!

यह देखकर, वहाँ उपस्थित सभी महात्माओं को 'अहो! अहो!' हो गया। सामान्यतया यदि किसी को संक्रामक रोग हो या न भी हो लेकिन दूसरे का जूठा खाना कोई खा नहीं सकता जबकि नीरू माँ ने बच्चे का जूठा श्रीखंड प्रेम से खाकर न सिर्फ बच्चे को अपना अनन्य प्रेम चखाया बल्कि वहाँ उपस्थित सभी महात्माओं को सच्चे प्रेम का परिचय करवाया!

पूज्यश्री के ५० वें ज्ञान दिवस

के शुभ अवसर पर हुए भव्य समारोह की एक झलक

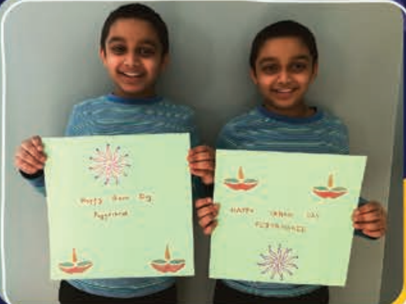

Akram Express

April 2021
Year : 8, Issue : 12
Conti. Issue No.: 97

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद **#** *हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा.* **AGIA4313#** *और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद सस हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा.* **AGIA4313##** *अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।*

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर **SMS** *करें।*

१. कच्ची पावती नंबर या **ID No.,** *२.पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगेज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।*

Publisher, Printer & Editor - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
Printed at Amba offset :- B-99 GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025